

नैतिक विकास में महापुरुषों के प्रेरक प्रसंगों की उपयोगिता

जीवन में प्रेरक प्रसंगों का बड़ा महत्त्व है। महान व्यक्तियों के जीवन के प्रेरक प्रसंगों को सिर्फ याद करने से ही हमें प्रेरणा मिलती है और हम स्वयं को उनके जैसा बनाने और उनके द्वारा दिखाये गये रास्तों पर चलने का प्रयत्न करते हैं। ईश्वर ने हम सभी को जीवन प्रदान किया है। जीवन का उद्देश्य केवल भौतिक सम्पन्नता प्राप्त करना या उच्च पद प्राप्त करना नहीं है। बल्कि जीवन वह है जिसमें निरंतर परिष्कार और विकास हो तथा साथ-साथ जिसमें अच्छे गुणों का समावेश हो। महापुरुषों के जीवन के कुछ प्रसंगों के स्मरण मात्र से ही प्रेरणा मिलती है। यहाँ हमने महापुरुषों के जीवन के कुछ प्रसंगों को उजागर करने का एक प्रयास किया है। आज के युग में हम कठिन प्रतियोगिता की दौड़ से गुजर रहे हैं। जीवन का लक्ष्य प्राप्त करने और आगे बढ़ने के लिए कठिन संघर्ष कर रहे हैं। इस प्रक्रिया में महापुरुषों के प्रेरक प्रसंग हमें लक्ष्य प्राप्त करने में सहायता कर सकते हैं।

महापुरुष सिर्फ विचारों से ही नहीं, कर्मों से भी अनुकरणीय होता है। विवेकानन्द के जीवन के कई ऐसे प्रसंग विभिन्न पुस्तकों में मिलते हैं, जिनसे बहुत कुछ सीखा जा सकता है तथा नयी दृष्टि प्राप्त की जा सकती है। इन प्रसंगों से गुजरना जीवन को लेकर एक सकारात्मक सोच विकसित करने के लिहाज से काफी महत्त्वपूर्ण माना जा सकता है। यहाँ पर हम विवेकानन्द जी के जीवन से जुड़े

ऐसे ही कुछ प्रसंगों का संकलन कर आप लोगों के समक्ष रखेंगे जिनसे सभी का नैतिक विकास समुचित रूप से हो सके।

छोटी-छोटी घटनाएँ कई बार बहुत बड़ी सीख दे जाती हैं। शास्त्रों में निपुण प्रसिद्ध ज्ञानी एवं प्रख्यात संत श्री देवाचार्य के शिष्य का नाम महेंद्रनाथ था। एक शाम महेंद्रनाथ अपने साथियों के साथ उद्यान में टहल रहे थे और आपस में वे किसी विषय पर चर्चा कर रहे थे। चर्चा का विषय था स्वर्ग-नरक, किसी एक साथी ने महेंद्रनाथ से पूछा क्यों मित्र! क्या मैं स्वर्ग जाऊँगा? महेंद्र ने उत्तर देते हुए कहा—जब “मैं” जायेगा तब आप भी जाओगे। यह सुनकर उसको लगा कि महेंद्र को अभिमान हो गया है, इसकी शिकायत गुरुदेवाचार्य से कर दी। गुरुदेव को पता था कि उनका शिष्य अहंकारी नहीं है, बल्कि अल्प शब्दों में उत्तर देता है। महेंद्रनाथ ने गुरुजी को बताया गुरुजी जब तक मनुष्य के भीतर का अहंकार नहीं मिट जाता तब तक वह स्वर्ग नहीं जा सकता। श्री देवाचार्य शिष्यों को समझाते हुए बोले—शिष्यों इनके कहने का मतलब सभी लोग समझ गये। जब तक मानव अपने मन, कर्म, वाणी से पवित्र नहीं होगा तब तक वह इस संसार में प्रतिष्ठा को प्राप्त नहीं कर सकता है।

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के बचपन की यह एक सच्ची घटना है, सुबह उनके घर के द्वार पर एक भिखारी आया उसको भीख मांगते देख इनके अन्दर दया का भाव जाग्रत हुआ, वे तुरन्त घर के अन्दर गये और उन्होंने अपनी माँ से कहा कि वे उस भिखारी को कुछ दे दें। माँ के पास देने के लिए कंगन के अलावा कुछ भी नहीं

था। उनकी माँ ने कंगन उतारकर ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के हाथ में रख दिया और कहा—“बेटा! मेरा कर्ज तू उस दिन उतार पायेगा, जिस दिन किसी और जरूरत मंद के लिए मुझे ये कंगन दोबारा नहीं उतारना पड़ेगा।” माँ की सीख ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के दिल को छू गयी और उन्होंने प्रण किया कि वे अपना जीवन गरीब-दुखियों की सेवा करने और उनके कष्ट हरने में व्यतीत करेंगे और उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन लोगों की सहायता करने में लगा दिया।

महापुरुषों के जीवन कभी भी एक दिन में तैयार नहीं होते। अपना व्यक्तित्व गढ़ने के लिए वे कई कष्ट और कठिनाइयों के दौर से गुजरते हैं और हर महापुरुषों का जीवन कहीं न कहीं अपनी माँ की शिक्षाओं से अधिक प्रभावित रहता है।

जीवन ही शिक्षालय— एक विद्यार्थी बीमार पड़ गया और उसकी उपस्थिति इतनी कम हो गयी कि परीक्षा में नहीं बैठ सकता था। वह घबराया और मालवीय जी के पास गया। मालवीय जी ने उसकी बातें ध्यानपूर्वक सुनी। वह कह रहा था, बाबूजी इम्तहान में न बैठ पाऊँगा और एक वर्ष फिर उसी कक्षा में पढ़ना पड़ेगा। मालवीय जी ने बच्चे से पूछा एक बात बताओ पढ़ना अच्छी बात है या नहीं? विद्यार्थी ने कहा—पढ़ना अच्छी बात है।

मालवीय जी ने कहा तो फिर पढ़ने से क्यों घबराते हो, विद्यार्थी को दर्जे का ख्याल किये बिना सच्चे मन से पढ़ना चाहिए। जिन्हें पढ़ना होता है वह यहाँ से निकलकर भी पढ़ता है। विद्या अर्जन के लिए कठिन तपस्या करनी पड़ती है। जीवन भर पढ़ने का सौभाग्य तो कुछ लोगों को ही मिलता है।

टीम भावना की शक्ति—

जार्ज वाशिंगटन कभी-कभी वेश बदलकर आम लोगों के बीच आते-जाते थे। उन्होंने टहलते हुए देखा कुछ मजदूर मिलकर एक लट्ठा छत पर चढ़ा रहे हैं। वे पसीने-पसीने हो रहे हैं। परन्तु सामान इधर से उधर नहीं कर पा रहे हैं। साथ में एक सुपरवाइजर भी था, जो मात्र अपने शब्दों में जोर लगाने के लिए उत्साहित कर रहा था, लेकिन हाथ नहीं लगा रहा था।

जार्ज वाशिंगटन ने उससे पूछा तुम थोड़ा हाथ क्यों नहीं लगाते ? अब तक तो यह सामान ऊपर चला गया होता। उसने कहा— मैं क्यों हाथ लगाऊँ मैं इनका सुपरवाइजर हूँ, अच्छा कहकर वाशिंगटन मजदूरों के साथ जुड़ गए और सामान जब तक ऊपर नहीं उठ गया वहाँ से नहीं हटे । चलते-चलते उन्होंने सुपरवाइजर से हाथ मिलाया और विदा लेते हुए कहा—मेरा नाम जार्ज वाशिंगटन है। सुपरवाइजर राष्ट्रपति का नाम सुनकर कांपने लगा। उसने क्षमा याचना की। जार्ज वाशिंगटन ने क्षमा कर दिया। अब सुपरवाइजर का हृदय श्रमिकों के प्रति परिवर्तित हो गया था।

“व्यक्ति का पद नहीं बल्कि कर्म महान होता है।”

जार्ज वाशिंगटन

राष्ट्र सेवा सर्वोपरि— महान क्रान्तिकारी मदनलाल ढींगरा को कर्जन वायली की हत्या के आरोप में इंग्लैण्ड की अदालत के फैसले के आधार पर फाँसी दी जा रही थी। उनके हाथ में पवित्र गीता की

एक प्रति थी । फाँसी पर चढ़ने के पूर्व उसने निर्भीकता पूर्वक अपना बयान दिया। मैं एक इंसान होने के नाते मेरा विश्वास है कि मेरे देश का अपमान करना ईश्वर का अपमान है, मेरे देश में ईश्वर की पूजा होती है। मेरे जैसे निर्धन पुत्र भारत माँ की आराधना के लिए अपने रक्त के अतिरिक्त क्या दे सकता है। ईश्वर से मेरी यही प्रार्थना है कि मैं तब तक उसी माँ से जन्मता रहूँ और फिर उसी उद्देश्य के लिए मरूँ जब तक कि भारत माता स्वतंत्र न हो जाए। ऐसा बयान देकर सहर्ष फाँसी पर झूल गये। देश में ऐसे वीर सपूत पैदा हुए जिनके लिए राष्ट्र सेवा से बढ़कर कुछ भी नहीं था।

देश में बहुत से ऐसे महापुरुष हुए हैं जिनके जीवन और विचार से कोई भी व्यक्ति बहुत कुछ सीख सकता है, उनके विचारों को अपना कर अपना जीवन बदल सकता है, विचार बदलकर सकारात्मक दिशा में कार्य कर सकता है। उनके विचार ऐसे हैं कि निराश व्यक्ति भी यदि उसे पढ़े तो, उसे जीवन जीने का एक नया मकसद मिल सकता है। इसी प्रकार एक महापुरुष गौतमबुद्ध के एक अनमोल विचार अपनाकर जीवन को परिवर्तित किया जा सकता है—

“हजारों मोमबत्तियों को एक मोमबत्ती से जलाया जा सकता है, इससे किसी भी मोमबत्ती के जीवन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता उसी तरह खुशियाँ बाँटने से जीवन कभी नहीं घटता है।”

महात्माबुद्ध

डॉ.अमर जीत

राज्य हिंदी संस्थान, वाराणसी

